T.T.D. Religious Publications Series No. 1113
Price :

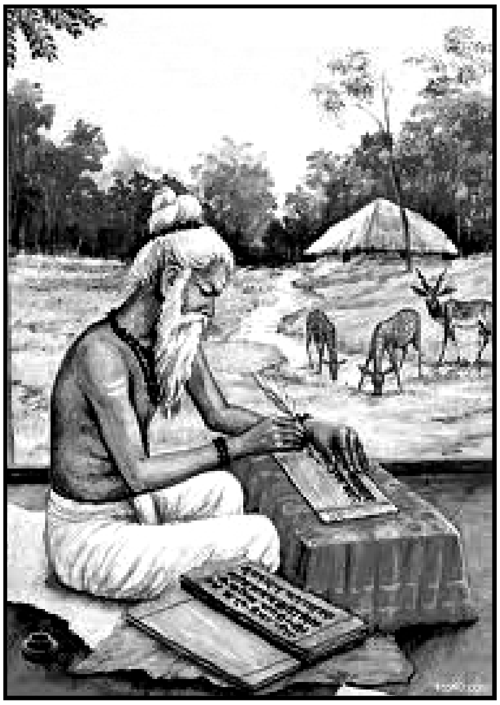
Published by **Sri M.G. Gopal,** I.A.S., Executive Officer,
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

श्रीनिवास बालभारती

वशिष्ठ

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एम. आर. राजेश्वरी



तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 165

वशिष्ठ

तेलुगु लेखक

प्रो. शलाक रघुनाथ शर्मा

हिन्दी अनुवाद

डॉ. एम. आर. राजेश्वरी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2014

Srinivasa Bala Bharati - 165
(Children Series)

VASISHTHA

Telugu Version
Prof. Salaka Raghunadha Sarma

Hindi Translation
Dr. M. R. Rajeshwari

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1113

First Edition - 2014

Copies : 5000
Price :

Published by
M.G. Gopal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़ कर सुवासित उनके दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उनमें हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिर काल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सबको उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ. एस.बी. रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया । इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया । प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा ।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि

एडिटर-इन-चीफ

ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्ष करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुईं उन्होने संस्कृति की दृढ नीवं डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

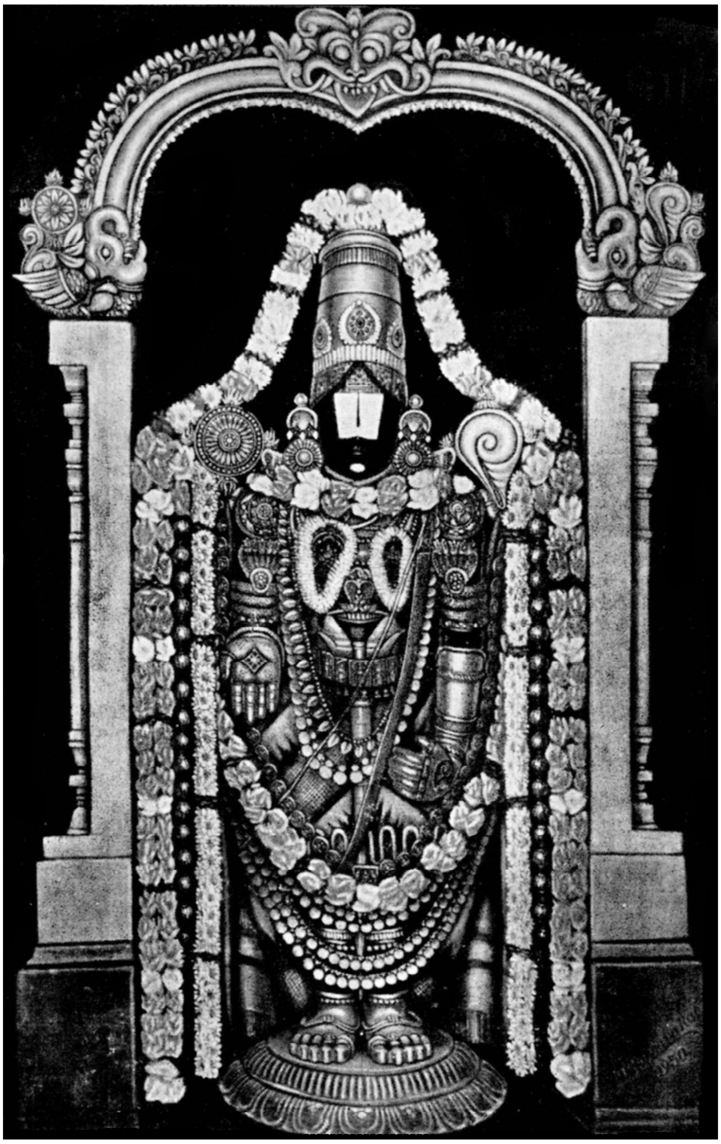
एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

''मंत्र फूंकने पर फल नीचे गिरते हैं क्या?'' - यह अविवेकियों का प्रश्न होता है। अरे! फलों का गिरना छोडिये, अनेकानेक विचित्र घटनायें घटित हो जाती हैं। ''ब्राह्मी शक्ति'' के सामने ''भौतिक शक्ति'' को सिर नवाना ही होगा। दम्भ से हुंकार करनेवाले, अधिकार के बल पर आक्रोश करनेवाले, हरदम उछलनेवाले अभागी अगर आनंद स्वरूपी, अमलचित्त से पूरे विश्व को ब्रह्ममय माननेवाले ब्रह्मनिष्ठ लोगों पर वार करेंगे तो इसका फल क्या ही निकलेगा?, श्रृंगभृंग होकर ही रहेगा।

सच्ची, हमारे पुराणों में एक घटना ऐसी घटित हुई - एक अहंकारी राजा ने अपने शस्त्रास्त्र बल से एक महर्षि पर आक्रमण किया। लेकिन वह ब्रह्मर्षि अपने सामने ब्रह्म यष्टि को रखकर, मुस्कुराते हुए प्रशांत मन से बैठा रहा। कई अस्त्र - शस्त्र समूहों में आये और ब्रह्म यष्टि से टकराकर भस्म हो गये। तीनों लोकवासी आश्चर्य विस्मित होकर इसे देख रहे थे। अंतिम जीत 'ब्रह्मतेजस्' में ही हुई। जिस रास्ते से क्षात्र शक्ति आई उसी रास्ते से वह हार मानकर वापिस लौटी।

विश्वामित्र, क्षात्रशक्ति का प्रतीक है, और ब्रह्मनिष्ठा के प्रतिनिधि वशिष्ठ हैं। इक्ष्वाकु कुल के कुलगुरु रहकर लोक कल्याण के लिए नींव डालनेवाले उस महापुरुष की कथा हमें स्फूर्ति प्रदान करती हैं। लीजिए पढिए।''

- प्रधान संपादक





वशिष्ट

शीत अनल

एक महाराज था, उसको एक सौम्य ब्राह्मण पर अत्यंत क्रोध हुआ। महाराजा के पास अनेकानेक शस्त्रास्त्र थे। उसने, क्रोध के मारे, ब्राह्मण पर शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया। ब्राह्मण के पास केवल एक ब्रह्मयष्टि था। उसने अपने सामने यष्टि को रखा। सभी अस्त्र यष्टि से लगते ही शलभों की भांति जलकर भस्म हो गये। सारे विश्व को केवल छूकर ही भस्म करनेवाले अपने अस्त्रों की निर्वीर्यता ने राजा को आश्चर्यचकित कर दिया। राजा की नाक कट गई। छी! छी! कहा। राजा ने मन ही मन सोचा - मुझे ब्रह्म तेजस् प्राप्त करना होगा। उसको तब लगा कि ब्रह्म तेजस् के आगे राज्य और अधिकार व्यर्थ ही हैं। वह सब कुछ त्यागकर तपस्या करने को निकला। दृढ संकल्प के परिणामस्वरूप वह ब्रह्मर्षि बना। उसने जो महाफल प्राप्त किया, उसका कारक कौन था? क्या आपको मालूम है? कारक थे वशिष्ठ महामुनि! उनके चरित्र की जानकारी लें क्या? आइये।

कुम्भ में जन्म

समस्त विश्व को प्रदीप्त करनेवाला सूर्य और पश्चिम दिशा के दिक्पाल वरुण, एक दिवस, विलासवंत भ्रमण के लिए निकल पडे। उनको देवलोक में अतीव सौंदर्यवती एवं अप्सरा 'उर्वशी' दिखाई दी। उर्वशी साधारण स्त्री नहीं है। वह श्रीमन्नारायण की उरु से पैदा हुई, वह एक पुण्य मूर्ति है। उसे देखते ही दोनों का मन विचलित हुआ। परिणामस्वरूप, इन दोनों का तेज नीचे फिसल गया। उर्वशी ने तब दो

अलग - अलग कुंभों में इनके तेज को भर दिया क्योंकि ये दोनों महापुरुष थे और इनके तेज के फिसलन से अमंगल हो सकता था। एक कुंभ का तेज वशिष्ठ के रुप में और दूसरे कुंभ का तेज अगस्त्य के रूप में परिणत हुआ। इसी कारण से इनको 'कुंभसंभव' कहते हैं। यह नाम अब केवल अगस्त्य के लिए प्रयुक्त हो रहा है। सूर्य का दूसरा नाम 'मित्र' भी है। मित्र और वरुण से पैदा होने के कारण इनको 'मैत्रावरुणी' भी कहा जाता है। लोक कल्याण के लिए ब्रह्म के मनस्संकल्प से जन्म लेनेवाले महानुभाव हमें पुराणों में दिखाई देते हैं। उनमें वशिष्ठ एक हैं। महापुरुषों को 'ब्रह्ममानस पुत्र' कहते हैं। वशिष्ठ के जन्म संबंधी ऐसी कथायें हमें पुराणों में मिलती हैं।

अन्यत्र ध्यान नहीं

इस प्रकार जन्म लेनेवाले उस महात्मा ने बाल्यकाल से ही तपस्या करना प्रारंभ किया। उसे दूसरी वस्तु में रुचि नहीं थी। मन में किसी विकारी भाव को स्थान न देकर, केवल भगवान पर ध्यान रखने का दृढ़ संकल्प ही तपस्या है। ऐसे व्यक्ति को विश्व में कोई शक्ति ऐसी नहीं रह जाती जो उसके लिए अप्राप्य हो। इसी तपस्या के कारण, वशिष्ठ ब्रह्मर्षि बने। इन्होंने तपस्या के बल पर क्या कुछ प्राप्त किया और उनकी साधना लोक कल्याण के लिए कितना उपयोगी बना, आदि की झांकियाँ, आगे देखेंगे, आइये -

बालू, चावल बना

अरुंधती, पतिव्रता का दूसरा नाम है। वह निरंतर देदीप्यमान रहनेवाली कांतिपुंज है। आकाश में आज भी वह नक्षत्र के रूप में दिखाई

देती है। किन्हीं पुण्य संदर्भों में उस ज्योति का विशेष वीक्षण हमारा संप्रदाय भी है। लोगों का विश्वास है कि इनके दर्शन से दर्शकों को अखण्ड पुण्य मिलता है। यही ज्योति, अरुंधती, वशिष्ठ महर्षि की धर्मपत्नी है। एक दिन वशिष्ठ महर्षि, बालू को हाथ में लिए इधर - उधर घूमते हुए लोगों से पूछने लगे - ''इस बालू से चावल बनाकर आप में से कोई मुझे खिला सकता है?'' अनुसूचित जातियों के ग्राम की एक कन्या इसके लिए तैयार हो गई। वह घडे में बालू डालकर अचंचल मन से भगवान के ध्यान में निमग्न हो गई और बालू चावल बन गया। वशिष्ठ महर्षि ने लड़की के माता - पिता से लड़की का हाथ मांगा, और विवाह के बाद उस चावल को खाया जो बालू से बना था। अरुंधती अपनी बाल्यावस्था में ही इतनी शक्ति प्राप्त कर गयी थी। वशिष्ठ और अरुंधती ने मानव जाति के लिए आवश्यक आदर्शात्मक दाम्पत्य जीवन प्रस्तुत करके दिखाया। उनके 'शक्ति', तथा अन्य बहुत बेटे पैदा हुए। इसी 'शक्ति' का वंशज 'पराशर' हैं। पराशर के बेटे 'व्यास भगवान' हैं जिन्होंने महाभारत, भागवत पुराण तथा अनेक पौराणिक ग्रंथों का प्रणयन किया।

भोजन की व्यवस्था कैसे किया?

वशिष्ठ महर्षि जंगल में तपस्या करते अपना समय व्यतीत कर रहे थे। तत्कालीन राजा विश्वामित्र जंगल में आखेट खेलते - खेलते थक गये और विश्राम लेने के लिए वशिष्ठ के आश्रम में पधारे। महाराजा के आने पर वशिष्ठ ने राजा तथा उनके परिजनों को भोजन खिलाया। राजा चकित रह गया। एक दरिद्र ब्राह्मण अकस्मात इतने सारे लोगों को भोजन

कैसे खिलाया? वशिष्ठ के आश्रम में केवल एक ही गाय था। लेकिन उस गाय से चावल, दाल, सब्जी, अनेक प्रकार के मिठाई ढेरों में आ रही थी। राजा और उसके पूरे परिवार ने भरपेट खाना खा लिया।

तुम्हारे गायों से मुझे फायदा नहीं

भोजन के बाद, ऋषि के पास आकर राजा ने मंद्र स्वर में कहा - 'हे स्वामी!' ऋषि ने उल्टा प्रश्न किया - 'क्या बेटा, बोलो।' राजा ने कहा- ''आपकी गाय बहुत अच्छी है। बहुत श्रेष्ठ भी है। ऐसी महिमान्वित गाय को मैं ने कहीं नहीं देखा। आप तो ज्ञानी हैं, और ऐसा कोई विषय नहीं है जिसकी सूझ आपको नहीं हो। इस प्रकार का गाय केवल राजाओं के पास ही होना चाहिए ना? मैं आपको एक लाख गऊ दूँगा। कृपया इसे मुझे दे दीजिए।'' वशिष्ठ ने जवाब दिया - ''बेटा, यह गाय किसी को देने की चीज नहीं है। वह न मुझे छोड़कर जी सकती है और ना मैं उसे छोड़कर। मेरे यज्ञ करते समय होम के लिये आवश्यक सारी वस्तुएँ वह मुझे देती है। तुम से मिलनेवाले गायों से मेरा काम नहीं चलेगा। मैं इसे दे नहीं सकता।''

उस महिमा को हासिल करना होगा

राजा क्रुद्ध हुए। ''मैंने तुम से सम्मानपूर्वक उसकी मांग की। अब नहीं देने का प्रश्न ही नहीं उठता। अमूल्य रत्न जहां - जहां होते हैं, उनको मांगने या बलात् हड़पने का अधिकार राजा के पास होता है। मैं इसे लेकर ही चलूंगा। जो चाहिए कर लो।'' राजा ने सेना को गाय ले जाने की आज्ञा दी। ये सारी बातें गाय की समझ से बाहर की थी। वह सोच में पड़ गई थी कि आखिर मुनि ने मुझे क्यों ही छोड दिया और सेना उसे


PANI

बलात् क्यों ले जा रही है। ऐसा सोचते हुए, गाय मुड़कर एक बार मुनि को देखती है। मुनि की मनोवेदना गाय को उनकी आंखों में दिखाई दी। बस, गाय के शरीर से सैकड़ों की संख्या में कुरूपी पैदा हुए और विश्वामित्र की पूरी सेना की हड्डियां तोड़ दी। राजा अत्यंत क्रुद्ध हुए। अपनी अस्त्रविद्या के बल पर राजा ने ऋषि पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। लेकिन ऋषि के ब्रह्म तेजस् के सामने राजा के सारे अस्त्र विफल हुए। राजा छिः! छिः! कहते सोचने लगा कि अपना बल, अपनी सेना, आखिर परिश्रम से प्राप्त अस्त्र विद्या भी एक दरिद्र ब्राह्मण के सामने निर्वीर्य हो गए। राजा ने निर्णय लिया कि मुझे ब्रह्मतेज को प्राप्त करना ही है। उसी दिन से राजा उसके लिये सायास प्रयत्न करने लगा लेकिन कभी - कभी गुस्सा आने पर वशिष्ठ को सताना भी प्रारंभ किया।

मित्रसखा, कल्माषपाद बना

सूर्यवंश में 'मित्रसखा' नामक एक राजा हुआ। एक दिन राजा आखेट खेलते जंगल में आया। वहाँ उसने दो शेरों को देखा और उनमें से एक को मारा। दूसरा शेर राक्षस का वेष धारण करके भाग गया। कुछ दिनों बाद यह राक्षस राजा मित्रसखा के पास वशिष्ठ के वेष में आकर कहा - ''मुझे नरमांस के साथ खाना खिलाओ'', और वहाँ से चला गया। राजा ने आगंतुक को वशिष्ठ ही समझा और भोजन का बंदोबस्त किया। कुछ देर बाद स्वयं वशिष्ठ वहाँ आये। प्रथम आगंतुक की मांग के अनुसार राजा ने नरमांस युक्त भोजन उसके सामने रखा। ऋषि अत्यंत क्रुद्ध हुए और शाप देते हुए कहा - ''मुझे जो नहीं खाना है, ऐसा भोजन

तुमने मुझे दिया, इसलिए तुम नरभक्षक बन जाओगे।'' राजा को मालूम नहीं था कि पहला आगंतुक वशिष्ठ नहीं, कोई और था। लेकिन अनजाने राजा ने वशिष्ठ को उल्टा शाप देने के प्रयास में हाथ में पानी लिया और कहा - ''तुम्हारी मांग के अनुरूप मैं ने तुम्हें खाना दिया लेकिन तुमने मुझे शाप दिया। इसलिए मैं भी तुम्हें शाप देता हूँ - 'तुम सूर्यवंश के राजाओं के गुरु रहने लायक नहीं हो।' राजा के शापजल छिडकने से पूर्व ही वशिष्ठ ने दिव्य दृष्टि से प्रथम आगंतुक की चाल पहचान लिया। उसने राजा पर अनुग्रह करते हुए कहा कि तुम बारह वर्षों में शापमुक्त हो जाओगे। ऐसी परिस्थिति में राजा को शाप देना उचित नहीं लगा और अपने हाथ का शापजल अपने ही पैरों पर डाल लिया। शाप जल मंत्रपूत था और इसलिए राजा के पैर जलकर काले पड़ गये। तभी से राजा का नाम 'कल्माषपाद' पड़ गया।

अच्छा अवसर

कल्माष पाद राक्षस बनकर एक दिन वशिष्ठ के आश्रम की ओर जा रहा था। रास्ते में वशिष्ठ के पुत्र 'शक्ति' खडा था। राक्षसत्व से उत्पन्न मद के कारण, राक्षस ने कहा - 'अरे, रास्ते से हट जाओ'। तब शक्ति ने कहा - 'जब मैं धर्म मार्ग पर हूँ, तो हटने के लिए क्यों कहते हो?' राजा गुस्से में आकर शक्ति को पीटता है। शक्ति ने तब शाप दिया - 'तुमने मुझे अकारण ही मारा, इसलिए तुम नरभक्षक बनकर राक्षस ही रह जाओगे।' राजा को तब पश्चात्ताप हुआ और शापमुक्ति के लिए रास्ता बताने की शक्ति से प्रार्थना की। तभी उस ओर विश्वामित्र आये। सारी घटना का वीक्षण किया। विश्वामित्र को लगा कि वशिष्ठ को सताने के लिए यह बढिया अवसर है। सोचते हुए उसने अपने एक किंकर को

राजा पर हावी कर दिया। आवेग में आकर राजा अपने कर्त्तव्य को भूलकर राक्षस की भांति घूमने लगा।

एक सौ लोग एक साथ

एक दिन राजा राक्षस के आवेग से मुक्त था। तभी एक ब्राह्मण उसके पास आकर याचना की कि मुझे मांसयुक्त भोजन खिलाओ। राजा ने सहमति दी। लेकिन खाना बनवाना राजा भूल गया। बाद में, नींद खुलने के बाद राजा को इस बात की याद हो आई। इसके साथ - साथ राजा में राक्षस का आवेग भी चढा। उसने रसोइया को मांसयुक्त भोजन पकाने की आज्ञा दी। रसोइया के यह कहने पर कि इस समय मांस नहीं मिलेगा, राजा ने नरमांस ले आकर खाना बनाने की आज्ञा दी। रसोइया, वध्यस्थान पर गया, मांस ले आया और आगंतुक को खिलाया। ब्राह्मण को इसका पता लग गया और उसने राजा को शाप दिया - ''तुम नरमांस खानेवाले राक्षस बनोगे।'' राजा को तब बात की याद आई कि यह सब शक्ति के शाप के कारण हो रहा है। राजा ने तब शक्ति और उसके सभी भाइयों को एकसाथ निगल लिया। इस प्रकार वशिष्ठ के एक सौ पुत्र एकसाथ मृत्यु को प्राप्त हुए।

तपःशक्ति का मुकाबला कौन ही कर सकता है?

साधारणतया, अपने बच्चे के जरा - दुःख को भी मा - पिताजी सह नहीं सकते हैं। बच्चे के पैर में चोट हुई तो मा - पिताजी पीडित होते हैं, थोडा बुखार आया तो वे तडपने लगते हैं। ऐसे में एक, दो, नहीं बल्कि एक साथ एक सौ पुत्रों को वशिष्ठ गंवा गये, तो उसके दुःख का क्या हम अंदाज लगा पायेंगे? वशिष्ठ को यह दुःख असह्य हो गया। वशिष्ठ

आत्महत्या कर लेने को तैयार हो गये यह जानते हुए भी कि आत्महत्या पापकर्म है। वशिष्ठ भभकते अग्निकुंड में कूद गये। उनकी तपःशक्ति के कारण वे अग्नि के समान और निखर उठे और अग्निकुंड उनको ठंडे कुहरे के समान बन गया। वशिष्ठ फिर अपने को समुद्र में डुबाने की कोशिश की जिसमें ऊँची - ऊँची आसमान को छूनेवाली लहरें उठती हैं। अपनी ओर दौडते बच्चे को जिस भांति मां अपने हाथों से उठाकर अपने वक्ष से चिपका लेती है, उसी भांति समुद्र ने वशिष्ठ को बचाकर सकुशल कूल पर पहुँचा दिया। वशिष्ठ के हृदय की वेदना ने उसके आत्महत्या के यत्नों को नहीं रोका। ऊँचे पहाड पर चढकर वशिष्ठ नीचे कूद पडे लेकिन निचला भाग उनके लिये रुई की बिस्तर बन गई। वशिष्ठ मन -ही-मन सोचने लगे - मुझे कोई और यत्न करना होगा। उसने रस्सियों से अपने हाथ-पैर बांध लिये। फिर ऐसी नदी में कूद पडे जिसमें घोर बाढ चढा हुआ था। बाढ का पानी जो अपने इर्द - गिर्द की सारी चीजों को अपने गर्भ में बलात् खींच ले जा रहा था, वही पानी वशिष्ठ के सारे बंधन तोडकर सकुशल कूल पर पहुँचा दिया। तपःशक्ति से क्या ही नहीं पा सकते? सामान्य मनुष्य के जान लेनेवाले सभी साधन इस तपोमूर्ति के प्राणरक्षक उपाय बने। निश्चल भक्ति से प्रह्लाद आदि ने, स्वच्छ, निर्मल तपस्या से वशिष्ठादि ने कितना ही महत्व प्राप्त किया, जरा ध्यानपूर्वक सोचिये।

वह कितना महान है?

आत्महत्या के सारे उपाय व्यर्थ साबित हुए। मुडकर, ऋषि अपने आश्रम का रास्ता मोलने लगे। ऋषि की बहू, शक्ति की पत्नी गर्भवती थी। गर्भस्थ शिशु वेदों का मंत्रोच्चारण कर रहा था। ऋषि यह सोचकर

कि मरे हुए अपने पुत्र वापस जिन्दा नहीं आयेंगे मां के गर्भ में रहते ही इतना वेदोच्चारण करने वाले अपने पौत्र को मुझे देखना होगा। मुझे यह भी देखना है कि वह कितना ही महात्मा है? उसके बाद ही मुझे मरना होगा। ऐसा सोचकर वशिष्ठ अपने आश्रम में रहकर बहू की रक्षा करने लगे। राक्षस प्रवृत्तिवाले कल्माषपाद एक दिन वशिष्ठ की बहू को निगलने के लिए उसके पीछे पड गया। वशिष्ठ ने उसको देखा। तुरंत ही उस राक्षस पर मंत्रजल छिडक दिया। राक्षस का शाप छूट गया और वह आदमी बन गया। शक्ति का बेटा ही 'पराशर' महामुनि हैं और व्यास भगवान के जनक हैं।

एक महीने में पुरुष एक महीने में स्त्री

वैवस्वत नामक एक राजा था। वह पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करना चाहा। वशिष्ठ के कहने पर उसने यज्ञ भी किया। रानी, चाहती थी कि उसे पुत्री ही पैदा हो। यज्ञ करने वाले दूसरे पुरोहित के सामने रानी ने अपनी इच्छा प्रकट की। उस पुरोहित ने बिना दूसरों से कहे, पुत्री पैदा होने के लिए आवश्यक मंत्र पढी। रानी को पुत्री ही पैदा हुई। रानी बहुत प्रसन्न हुई। राजा असंतुष्ट हुआ। उसने वशिष्ठ से पुत्र की जगह पुत्री पैदा होने का कारण पूछा। ऋषि ने दिव्य दृष्टि से इसका कारण जान लिया और भगवान विष्णु की प्रार्थना करके पुत्री को पुत्र बना दिया। यही बालक सुद्युम्न है। जब वह लडकी था, तब उसका नाम 'इला' था। सुद्युम्न एक दिन नृत्य करते - करते 'कुमारवन' में चला गया जहाँ पार्वती परमेश्वर विहार किया करते थे। वहाँ शिव को छोडकर दूसरे पुरुष का जाना मना था। उस स्थान पर पहुँचनेवाला पुरुष बन जाता है। उस स्थान

पर शिव का यह शाप था। शापग्रस्त होकर सुद्युम्न पुनः स्त्री बन गया। उस सुंदरी को चंद्र के बेटे बुध ने देखा। दोनों, एक-दूसरे से आकृष्ट हुए, विवाह किया और कुछ समय तक दांपत्य जीवन भी बिताया। परिणाम स्वरूप उनको पुरुरवा नामक बेटा पैदा हुआ। 'इला' अपने स्त्रीत्व को लेकर दुःखी थी और चिंता कर रही थी मुझे इस शाप को और कितने समय तक वहन करना होगा? उसने अपने कुलगुरु वशिष्ठ जी की याद की। वशिष्ठ, इला की चिंता समझ गये और शिव की प्रार्थना की। वशिष्ठ की प्रार्थना से शिव संतुष्ट हुए। अपने शाप को तथा वशिष्ठ की प्रार्थना को ध्यान में रखकर, दोनों में विघ्न न डालकर सुद्युम्न को एक महीने पुरुष के रूप में, अगले महीने स्त्री के रूप में रहने का अनुग्रह किया। महापुरुषों के संकल्प कितने उदात्त फल प्रदान करते हैं, इसके लिए यही कहानी साक्षी है।

मेरे पिताजी को संतुष्ट करो

सूर्यवंशी राजाओं में 'संवरण' नामक एक प्रख्यात राजा था। एक दिन जंगल में आखेट खेलते समय उसको एक सुंदर कन्या दिखाई दी। उसका शरीर बिजली की रेखा की तरह कांतिमय था। उसके चेहरे के वर्चस्व का वर्णन शब्दातीत है। कोमलतम फूलों की पंखुडियों के निचोड से बनी मूर्ति लगती है। उसको देखते ही राजा के मन में प्रेम जागृत हुआ। राजा उसके निकट पहुँचा, कि इतने में वह अंतर्धान हो गई। एक सुंदर पुरुष को अपने लिए तडपते देखकर लडकी बहुत प्रसन्न हुई। वह सूर्य की पुत्री थी। पिता की अनुमति के बिना उसको विवाह नहीं करना था। इसलिए वह धीरे - धीरे राजा से कहती है - ''मेरा नाम 'तपती' है। मेरे

जनक सूरज हैं। उनका अनुग्रह प्राप्त करके मुझसे विवाह कर लो।'' यह कहकर तपती तुरंत अपने लोक में चली जाती है।

दोष राजा का, दण्ड देश को

सूरज को संतुष्ट करने का कोई उपाय राजा नहीं जानता था। वह चिंता कर रहा था। वशिष्ठ को इसका पता लगा। ऋषि अपनी तपःशक्ति के बल पर सूर्यलोक में पहुँचा। उसने सूर्य की प्रार्थना की। संवरण के विवरण प्रस्तुत करके तपती से उसका विवाह संपन्न करने की अपनी इच्छा प्रकट की। वशिष्ठ के कहने पर सूर्य न कह नहीं सके और अपनी बेटी को राजा के हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार वशिष्ठ की शक्ति के कारण एक सामान्य मनुष्य का विवाह एक दिव्यकांता के साथ हुआ। ऐसे व्यक्तियों को अघटन घटना समर्थ कहते हैं। 'संवरण', तपती के मोह में पडकर अपने राजकार्य को नजरंदाज किया। राजा के दोष के कारण राज्य का हाल भ्रष्ट हुआ। उस देश में कुछ समय तक वर्षा नहीं हुई, बिना वर्षा के फसल कैसे उगेगी? प्रजा बहुत दुःखी थी। ऐसी परिस्थिति में वशिष्ठ ने शांति क्रिया कर्म करवाकर अकाल को दूर कराया तथा राजा एवं प्रजा की रक्षा की। सच्चे कुल गुरु इसी प्रकार के होते हैं। तपती और संवरण का पुत्र ही कुरु चक्रवर्ती है। इसी चक्रवर्ती के कारण कौरव वंश को विश्व में ख्याति मिली।

हरिश्चंद्र - सत्यनिष्ठता

कोई ऐसा व्यक्ति होता नहीं होगा जो राम को नहीं जानता हो। रावण को मारकर समस्त लोकों की रक्षा करने के लिए स्वयं विष्णु ही राम के रूप में पैदा हुए। जिस वंश में राम पैदा हुआ, उसे इक्ष्वाकु,

रघुवंश कहते हैं। इस वंश के सभी राजा महान हैं। अच्छे भी हैं। वशिष्ठ इस वंश के कुलगुरु हैं। इक्ष्वाकु वंश के सभी राजा इनको भगवान के समान मानते हैं। वशिष्ठ भी उनकी रक्षा कर रहे थे। वशिष्ठ अपनी मंत्रशक्ति एवं तपःशक्ति के बल पर उन राजाओं की सारी विपदाओं को दूर करते थे। स्वयमेव उस वंश के राजा महान थे। वशिष्ठ के बल से वे पृथ्वी पर अति सम्माननीय हुए। हर एक राजा ने अपना ही एक अद्वितीय विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। सत्यवाक् शब्द सुनते ही हमें हरिश्चंद्र की और हरिश्चंद्र का नाम सुनते ही सत्यवाक की याद आती है। इस हरिश्चंद्र का यश तीन लोकों में व्याप्त होने के लिए वशिष्ठ कैसे कारक बने, आइए देखेंगें।

जब तक सूरज - चांद रहेंगे

सत्य का पालन कितना ही सफलतापूर्वक हो रहा है, इस विषय पर एक दिन इंद्रसभा में चर्चा हो रही थी। उस सभा में उपस्थित वशिष्ठ ने कहा कि सत्य का पालन करने में हरिश्चंद्र अद्वितीय हैं। वशिष्ठ से विश्वामित्र सदा असहमत रहते थे। विश्वामित्र ने इस संदर्भ में शपथ लिया कि वे हरिश्चंद्र से असत्य बुलवायेंगे। वशिष्ठ ने उसे असंभव कहा। अपनी शपथ पर अडिग रहकर विश्वामित्र ने हरिश्चंद्र को नाना यातनायें दी। हरिश्चंद्र से राज्य छीन लिया, उसी से पत्नी और बेटे को बिका दिया। स्वयं हरिश्चंद्र को चंडाल को बेच दिया। राजा ने कष्ट से कष्टतर यातनाओं का सामना किया लेकिन सत्य का भंग नहीं किया। जब तक सूरज - चांद रहेंगे, तब तक इस राजा का यश पूरे जगत में व्याप्त रहेगा ही। इसके लिये वशिष्ठ एक कारक हैं। उस राजा के सत्य पालन पर कुलगुरु का अटल विश्वास बहुत महान है।

किया हुआ दोष ठीक कर लो

सूर्यवंश में दिलीप नामक एक महान राजा था। वह धर्मात्मा था। अपनी प्रजा को अपनी संतान माननेवाला था। वह इतना महान था कि वह सशरीर स्वर्ग के स्वामी इंद्र के पास हो आता था। एक दिन इंद्र से मिलकर वह वापस लौट रहा था। उस समय राजा को धर्मसंरक्षणार्थ अपनी पत्नी सुदक्षिणा देवी से मिलना अनिवार्य हुआ था। जल्दबाजी में समीपस्थ कामधेनु की पूजा करना भूल गये। कामधेनु रुष्ट हुआ और शाप दिया - 'मेरा अपमान करने के कारण तुम्हें संतान नहीं होगी।' शाप देते समय, पास में खडे गजराज ऐरावत के द्वारा घन घोर आवाज करने के कारण राजा को शापवचन सुनाई नहीं दी। शाप के कारण लंबे समय तक राजा निस्संतान ही रहा। उन दिनों संतान के लिए ही विवाह होता था। संतान के बिना पत्नी से केवल दांपत्य सुख की प्राप्ति पाप समझी जाती थी। इस प्रकार राजा और रानी बहुत दुःखी थे। ऐसी परिस्थिति में उनकी रक्षा करनेवाला व्यक्ति एकमात्र गुरु ही होता था। राजा अपना राज्यभार मंत्रियों पर छोडकर रानी के साथ वशिष्ठ के आश्रम के लिए रवाना हुआ। राजा और रानी ने ऋषि के पादपद्मों पर माथा टेककर अपनी व्यथा सुनाई। ऋषि ने अपनी दिव्य दृष्टि से कामधेनु के शाप की जानकारी ली और राजा से कहा - ''बेटा! तुमने अनजाने एक गलती की। तुमको उसे ठीक करना होगा। अभी तो कामधेनु अन्यकाम से पाताल लोक में गई है। उस माता की समवर्ती पुत्री 'नंदिनी धेनु' मेरे आश्रम में है। इस गाय की पूजा करके, उसकी दया से संतान प्राप्त करो।''



प्रतिच्छाया बनकर नित्य सेवा

दिलीप महाराज, अपने ऐश्वर्य तथा अधिकार को त्यागकर, मात्र पशुपालक बनकर उस गाय की सेवा में लग गया। गाय जब खडी होती है, तब वह खडा हो जाता है। गाय जब बैठती है, राजा तभी बैठता है। गाय जब घास चरती है, तब वह खाना खाता है। गाय पानी पीती है तो राजा भी पानी पीता है। राजा, उस गाय का प्रतिबिम्ब मात्र बनकर जी रहा था। दिनभर जंगल में जाकर उस गाय को चराना, रात के समय गाय के साथ गोशाला में ही विश्राम करना, राजा का नित्यजीवन रहा। बीस दिनों के लिए राजदंपति ने इस प्रकार गाय की अविराम सेवा की। नंदिनी धेनु को इनकी सेवा से बहुत आनंद मिला। इसके अलावा राजा की वचनबद्धता एवं सेवातत्परायणता देखने योग्य है।

केवल एक गाय के लिए प्राण त्याग दोगे क्या?

सेवा करने के लिए वही अंतिम दिन था। गाय के देख - रेख में कहीं कोई छोटी - सी भूल - चूक भी नहीं हुई। गाय जिस जंगल में घास चर रही है, वह हरे - भरे वृक्षों से, रंगीन फूलों से, कल-कल करती झरनों से चक्षुसुखद लग रहा है। आज ही इस जंगल का सौंदर्य राजा के मन को आकृष्ट कर रहा है। आज उसे गाय की सेवा को छोडकर और कुछ सूझ ही नहीं रहा था। एक पल के लिए प्रकृति के सौंदर्य का आस्वादन करते गाय के ध्यान से जरा हटा, तभी एक सिंह गरजते हुए गाय पर टूट पडा। तृक्षण राजा की दृष्टि गाय पर और उसका हाथ बाण पर, दोनों एक साथ प्रसारित हुए। तीर निकालने के लिए हाथ उस तक पहुँचा कि हाथ वहीं अटक गया। तभी सिंह एक मनुष्य की भांति बोलने लगा

- ''हे राजन्! मैं शिवकिंकर हूँ। इस वन की रखवाली करता हूँ। यहाँ आनेवाले पशु को खाकर इस वन की रक्षा करने की आज्ञा मुझे शिव से मिली है। आज के लिए तुम्हारा गाय मेरा भोजन है। तुम चले जाओ'' उस वाणी को सुनकर राजा ने जवाब दिया - ''हे मृगेन्द्र! यह मेरे गुरु के प्राणों के समान है। अगर तुमको भोजन ही चाहिए, तो गाय को छोड दो और मुझे खा लो। मुझ पर दया करो और मुझ पर कोई लांछन मत आने दो। तब सिंह ने जोर से हंसकर कहा - ''तुम कितने मूर्ख हो, तुम चक्रवर्ती हो, उम्र तुम्हारी छोटी है, अधिकार भोगने के लिए पूरा जीवन है। केवल एक गाय के लिए प्राण त्यागने के लिए क्यों सोच रहे हो? तुम चाहो तो क्या अपने गुरु को सैकडों गाय दे नहीं सकते? ऐसे में तुमको प्राण क्यों ही त्यागना है?'' इन शब्दों को कहते सिंह ने राजा का परिहास किया।

एक दिव्य नक्षत्र

राजा ने कहा - ''इस गाय की महत्ता तथा मेरे गुरु का सामर्थ्य तुम नहीं जानते हो। अपकीर्ति का बोझ मेरे लिए असहनीय है। यह शरीर तो नश्वर है। इस गाय की रक्षा हेतु, अगर मैं मर भी जाऊँ, तो मुझे पुण्य मिलेगा। मुझ पर दया करो, मुझे पुण्य कमाने दो।'' इन शब्दों के साथ राजा ने अपने हाथ - पैर एवं शरीर संकुचित किया और सिंह के लिए एक कौर के योग्य बनकर उसके मुँह के पास बैठ गया। सिंह के टूट पडने के इंतजार में था। लेकिन कर्णपुटों में अमृतवर्षा हुई और कुछ शब्द सुनने को मिले - ''बेटा! उठो! वशिष्ठ महामुनि की तपःशक्ति के कारण तुम्हें हिंसा पहुँचानेवाला प्राणी इस सृष्टि में नहीं है। मैंने तुम्हारी परीक्षा

ली। तुम्हारी आराधना ने मुझे अति संतोष दिया। तुम जाकर एक कटोरी ले आओ, उसमें मेरा दूध भरकर पी लो। तुम्हें बेटा पैदा होगा।'' नंदिनी गाय के इन वचनों से राजा अति प्रसन्न हुआ। तब राजा ने विनयपूर्वक नंदिनी से कहा - ''माँ! मुझपर तुम्हारी कृपावृष्टि हुई। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मेरी तपस्या का फल मुझे मिला। तुम्हारे क्षीर का उपयोग सर्वप्रथम गुरुजी के होमकार्य के लिए होना चाहिए। तुम्हारे बछडे को भी पेट भर क्षीर पीना है। उसके उपरांत ही बचा हुआ क्षीर मैं लूंगा। लेकिन उसके लिए भी मुझे गुरु की आज्ञा लेनी होगी।'' नंदिनी के द्वारा ली गई दूसरी परीक्षा में भी राजा विजयी हुआ। उतना आत्मनिग्रह, ऐसी दीक्षा एवं धर्म के आचरण में अपने प्राणों तक को भी त्यागने के लिए तैयार रहनेवाले कितने ही होंगे? इसी कारणवश वह राजा दिव्य नक्षत्र बनकर देदीप्यमान रह गया। वशिष्ठ के आशीर्वचन से गाय ने आत्मतोष के साथ राजा को दूध दिया। राजा उसका सेवन करता है और अपने गुरुदेव से अनुमति लेकर अपनी राजधानी के लिए रवाना होता है। कुछ समय उपरांत रानी के गर्भ से अनमोल रत्न जैसा बेटा जन्म लेता है। वशिष्ठ ने राजा को इस प्रकार पुन्नाम नरक से बचाया।

हृदय को धक्का लगा

सूर्यवंश में पैदा होनेवालों में 'रघु' नामक चंद्रमा समान एक महाराजा का जन्म हुआ। उसने पृथ्वी के सभी राजाओं पर विजय प्राप्त किया और हारनेवालों के पास जितनी अनुपयोगी धनराशी थी, सभी को उठाकर अपने साथ ले आया। उसी धनराशि के सहारे राजा ने एक बहुत बडे यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ के नियमानुसार, राजा को अपनी

पूरी संपदा दान में देना होता है और अपने लिये थोडा भी बचाना नहीं होता। राजा ने नियम का सही पालन किया। यज्ञ की समाप्ति के बाद राजा ने अपना सर्वस्व लोक के लिए अर्पित कर दिया और धवल जलद की भांति प्रज्वलित हुआ। ऐसी दशा में एक विद्यार्थी उस राजा के पास आया। उस व्यक्ति को करोडो रुपयों की आवश्यकता हुई। महाराजा को छोडकर दूसरा कोई उसकी मदद नहीं कर पाता था। लेकिन राजा की दशा एक दरिद्र की सी थी। राजा को देखकर विद्यार्थी को ऐसा लगा कि राजा उसकी मदद कर नहीं पायेगा। लेकिन राजा के दानी प्रवृत्ति को देखकर विद्यार्थी बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने विद्यार्थी की अतिथि पूजा की और तदुपरांत सविनय उनसे प्रश्न किया - ''स्वामी! आप क्या ही माँग लेकर यहाँ पधारे हैं?'' विद्यार्थी जवाब देने में असमर्थ हुआ। फिर भी अपनी कहानी इस प्रकार प्रारंभ किया -

तुम्हारा विनय ही मेरे लिए दक्षिणा है

''हे महाराज! मेरा नाम 'कौत्स' है। वरतंतु महामुनि के गुरुकुल में मैं ने विद्याभ्यास किया। सारी विद्या के आर्जन के बाद, गुरुदेव ने मुझे आशीर्वचन दिया और घर वापिस लौटकर गृहस्थाश्रम स्वीकार करने की आज्ञा दी।'' मैं ने हाथ जोडकर सविनय पूछा कि मैं गुरुदेव के पादपद्मों में कौन-सी गुरु दक्षिणा समर्पित करुँ? तब गुरुदेव मुस्कुराते हुए कहा - ''मुझे कुछ नहीं चाहिए बेटा। तुम्हारा विनय ही गुरुदक्षिणा है।'' लेकिन मैं ने जिद्द पकडा। गुरुदेव क्रुद्ध हुए और कह गये - ''ठीक है, तुमने मुझसे चौदह प्रकार की विद्या सीखी और इसके लिए तुम चौदह करोड सोने के सिक्के समर्पित करो।'' विद्यार्थी, राजा से आगे कहता है - ''उतना

धन मैं कहाँ से लाऊँ? तुम तो चक्रवर्ती हो, धर्ममूर्ति हो, इसीलिए धीरजपूर्वक मैं तुम्हारे पास आया हूँ। लेकिन तुम उस रिक्त चंद्रमा की भांति दिखाई दे रहे हो जो देवताओं के अमृत पान के बाद रिक्त हो जाता हो। ठीक है मेरा भाग्य भी ठीक नहीं है। हे राजा, तुम चिंता मत करो। मैं कोई दूसरी दाता की खोज करुँगा।''

मंत्रजल का प्रभाव

इन शब्दों को सुनकर राजा मन से खिन्न हो उठा। राजा सोचता है- अपने पास आकर, दान न मिलने पर दूसरों के पास याचना के लिए जाना, शायद ऐसी घटना अपने वंश में कभी किसी राजा के साथ घटित नहीं हुआ होगा। मेरे पास जो याचक आया, वह वेद वेदांग पारंगत ऋषि पुत्र हैं। उसने गुरु - दक्षिणा के लिए धन मांगा। मैं सूर्यवंशीय राजा हूँ। मुझसे धन न मिलकर किसी और के पास जाना मेरे लिए कितना ही अपमानजनक विषय है। इस प्रकार सोचते हुए राजा ने मुनिबालक से कहा - ''हे स्वामी! मैं रुपयों की व्यवस्था करने का प्रयास करुंगा, आप दो - तीन दिनों के लिए मेरे अग्निहोत्र गृह में ठहरिये। आप रुपयों के लिए किसी के पास मत जाइए, यह मेरी प्रार्थना है।'' राजा ने सारथी से रथ यात्रा की तैयारी करने की आज्ञा दी। उसकी यात्रा कहाँ तक है, पता है? कुबेर तक है। कुबेर धन के अधिपति हैं। राजा याचना के लिए नहीं जा रहा है क्योंकि याचना का नाम उस वंश में न कहने को मिलता है और ना ही सुनने को। युद्ध करके विजयी होकर लाना होगा। कुबेर, अलकापुरी में रहते हैं। वह इस पृथ्वी का भाग नहीं है। वह आसमान में कहीं दूर है जिसे मनुष्य देख नहीं सकता। वहाँ तक एक सामान्य व्यक्ति पहुँच ही नहीं सकता। तब यह राजा कैसे पहुँचेगा? इस वंश के राजाओं

के लिए अलभ्य वस्तु को सुलभ करना उनके कुलगुरु वशिष्ठ जी से ही संभव था। वशिष्ठ ने मंत्रजल को राजा के रथ पर छिडक दिया। तपःशक्ति का अद्भुत प्रभाव रथ पर पडा। अब वह रथ केवल पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि जहाज की भांति जल पर, वायुयान की भांति आकाश में यात्रा कर सकता है। इतना ही नहीं, वह पहाड को भी लांघ सकता है क्योंकि उस ऋषि की तपःशक्ति इतना श्रेष्ठ है और सब कुछ सुसाध्य कर सकता है। गुरु का शिष्य पर वात्सल्य इतना महान और प्रामाणिक है। कुबेर को पता चला कि रघु महाराज उन पर आक्रमण करने के लिए निकल रहे हैं। 'महाराज को इतना कष्ट क्यों ही उठाना है' - ऐसा सोचकर कुबेर ने राजा के खजाने में कनकवर्षा कर दी। रघु महाराज ने कौत्स को सारा धन दे दिया। विद्यार्थी की इच्छा पूरी हुई, साथ - साथ राजा का यश भी बच गया। इस प्रकार वशिष्ठ की महिमा ने उन राजाओं की समस्याओं का अच्छा परिष्कार कर दिखाया।

कितना धर्मनिष्ठ है!

रघु महाराज को अमूल्य रत्न समान एक बेटा पैदा हुआ। उनका नाम 'अज' है। उनका हृदय नवनीत जैसा मुलायम है। उनका सौंदर्य अभूतपूर्व था। उनकी धर्मनिष्ठता तो अद्वितीय ही है।

विदर्भ महाराज, अपनी बहन इंदुमती का स्वयंवर करने जा रहा था। इसके लिए सभी राजाओं को आह्वान मिला। 'अज' महाराज भी उसके लिए रवाना हुए। रास्ते में राजा विश्राम करने हेतु एक स्थान पर ठहरे। महाराज होने के कारण उनके साथ सेना का एक टुकडा भी था। सभी विश्राम कर रहे थे। अकस्मात् एक बडा गज उनके शिविर में घुस आया।

राजा की सेना में मौजूद सभी हाथी उसके भयंकर रूप को देखकर तितर - बितर होते सेना को कुचलने लगे। सभी अश्व, कीडों की भांति हवा में उडते भागे जा रहे थे। पूरी सेना बिखर गई। शुभकार्य के लिए निकली सेना बिखर गई। ऐसी स्थिति में एक समर्थवान कितना ही क्रुद्ध होता है? लेकिन यह राजकुमार वशिष्ठ का शिष्य है। उसने धर्मशास्त्र के गुरुओं से सुना था कि हाथी को केवल युद्ध के दौरान ही मारना होता है, और किसी संदर्भ में नहीं। इस बात को याद करके, राजा ने हाथी को बहकाने के लिए एक बाण उस पर छोडा। राजा का हृदय कितना कोमल है। वह कितना ही दयावान है। हाथी के द्वारा वह कुचल भी सकता था। ऐसी स्थिति में भी हाथी पर करुणा दिखाकर अपनी धर्मनिष्ठता बनाये रखा। इस वंश के राजा जो स्वभाव से ही उत्तम गुणवाले हैं, उनके चरित्र को वशिष्ठ के द्वारा मिली शिक्षा - दीक्षा उनको और चमकृत कर देती है। इसीलिए सभी राजा इहलोक में आदर्शवान बने।

इंदुमती सौंदर्य एवं शील के लिए प्रख्यात थी। उसके स्वयंवर में बहुत सारे राजकुमार आये। सभी वीरता और शूरता में एक समान थे। इंदुमती की सहेली ने सभी राजकुमारों की विशेषताओं का वर्णन करके उसे सुनाया। विवेकवती वधू ने सभी का तिरस्कार कर अज महाराज का वरण किया। इसका अर्थ यही निकला कि सभी में अज ही श्रेष्ठ हैं।

धीरज धारण करो

राजा और रानी दोनों, फूल और भौंरे की भांति प्रेमपूर्वक दांपत्य जीवन बिता रहे हैं। उनके प्रेम के फलत्वरूप श्रीराम के पिता दशरथ का जन्म हुआ। एक दिवस दोनो राजा - रानी विहार के लिए निकले कि

अकस्मात् इंदुमती के कंठ में एक माला आकर गिरा। तत्क्षण वह नीचे गिर गई और मृत्यु को प्राप्त हो गई। अज महाराज को पूरा विश्व शून्यमय लगने लगा। उसको लगा कि पत्नी के बिना उसका जीना असंभव ही होगा। तीव्र वेदना ने उनके हृदय को बोझीला बना दिया। वशिष्ठ ने अपने शिष्य पर टूटी इस विपदा को दिव्यदृष्टि से ग्रहण किया। वशिष्ठ दीक्षापूर्वक एक यज्ञ करा रहे थे। इसके कारण वे अपने शिष्य के पास आ नहीं पाये। लेकिन मौन भी नहीं रह सके। राजा को समझा - बुझाने के लिए उन्होंने अपने एक विवेक व समर्थ शिष्य को उनके पास भेजा। उसने अज महाराज से इस प्रकार कहा - ''बेटा! तुम्हारी पत्नी इंदुमती एक अप्सरा थी। शापग्रस्त होकर इस पृथ्वी पर पैदा हुई। अब उसका शाप भंग हुआ। इसीलिए अपने स्वस्थान पहुँच गई। राजा के लिए अपना राज्य, अपनी भूमि ही पत्नी होती है। इसीलिए तुम अपना शासन समर्थपूर्ण ढंग से चलाओ। तुम ज्ञानी हो, तुमको धीरज धरना होगा। तुम्हारे दुःखी होने पर भी वह लौटकर नहीं आ सकती। अगर तुम उसके लिए मर जाओगे, तब भी तुम उसे नहीं पाओगे क्योंकि मृत्यु प्राप्त करनेवाले अपने - अपने कर्मों के अनुसार अलग - अलग लोकों में जन्म लेते रहते हैं।

इसलिए तुम दोनों का पुनः मिलने की आशा नहीं है। अपने दुःख से मुक्त हो जाओ। अपनी प्रिया के लिए पारलौकिक कार्यक्रम का निर्वाह श्रद्धापूर्वक करो। मरे हुए लोगों के स्वजन अगर ज्यादा अश्रु बहाते हैं तो धर्मशास्त्र के अनुसार ये अश्रु उनकी गति भ्रष्ट करके उनका दहन कर देते हैं। इसलिए हे बेटा! मत रोओ!'' अग्नि में भभकने वाले

को अमृत की छीटे जिस भांति शांति प्रदान करती है, उसी प्रकार आगंतुक के शब्दों ने राजा को शांति प्रदान किया। राजा का पुत्र गद्दी पर बैठने योग्य बन गया था। 'अब मुझे राज्य भार क्यों ही उठाना है?' ऐसा सोचकर राजा ने युवराज का पट्टाभिषेक कराया। उसने योग मार्ग के द्वारा देह को छोडकर मोक्ष को प्राप्त किया। इस प्रकार कुलगुरु वशिष्ठ से इस वंश के राजाओं को विपदा काल में आश्रय मिलता ही रहा।

राम से बहुत प्यार

दशरथ, अज महाराज के पुत्र हैं। अज के बाद दशरथ कोसलदेश के राजा बने। उनकी तीन पत्नियाँ थी - कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी। राजा की उम्र बढ रही थी लेकिन तीनों में से एक पत्नी से भी संतान पैदा नहीं हुई। क्या मेरे साथ ही अपना वंश अंत हो जायेगा? यही राजा की प्रमुख चिंता थी। चिंता के मारे राजा अशक्त हो रहा था। तब वशिष्ठ ने राजा से अश्वमेध याग तथा पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराया। उसके फलस्वरुप महाविष्णु की चार भुजाओं की भांति, चार पुत्र पैदा हुए। उन में प्रथम पुत्ररत्न श्रीरामचंद्र थे। उनके सौंदर्य का आस्वादन करने के बाद, लोग आसमान में चमकते चंद्रमा का मजाक उडाते थे। उनको किसी ने एक बार देखा तो आंख हटाने का नाम नहीं लिया। उनके बारे में कोई जितना भी सुनता, कम ही मोहसूस करता। वृध्दावस्था में ऐसे पुत्र को प्राप्त करनेवाले पिता के प्रेम का क्या ही कहना होता है? राम तो उनके प्राण ही थे। राम ही उनका सर्वस्व था। राम को देखे बिना राजा एक पल के लिए भी रहनेवाले नहीं थे। राजा दशरथ पर एक दिन एक संकट आया।

हृदय कंपित हुआ

एक दिन राजा अपनी सभा में उपस्थित था। अकस्मात् विश्वामित्र के आगमन का समाचार मिला। उन दिनों सभी लोगों में विश्वामित्र के प्रति भक्ति मिश्रित भय था। सभी महाराजा भी उनको देवता मानकर पूजा किया करते थे। समाचार मिलने के तत्पश्चात् महाराज, विश्वामित्र के स्वागत के लिए दौडे - भागे चले। विश्वामित्र की उचित पूजा की, और अपनी सभा में ले आये। ''मेरे यज्ञ की रक्षा करना है। मारीच तथा सुबाहु नामक दो राक्षस मेरे यज्ञ का भंग कर रहे हैं। दीक्षा में रहने के कारण मुझसे कुछ भी नहीं हो पा रहा है। इसलिए राम को भेजो, यज्ञ के समापन के बाद मैं राम को तुम तक सकुशल पहुँचा दूँगा'' ऋषि ने महाराज से कहा। राजा का हृदय कांपने लगा। एक छोटे बालक को राक्षसों के सामने कैसे भेजूँ। ऋषि की सेवा करते समय राजा ने कहा - ''आप जो माँगेंगे, दूंगा। ये वचन महाराज के थे जो ऋषि के मांगने से पहले ही राजा के मुंह से निकल पडे थे। अब राजा 'नहीं' कह नहीं सकता। उसके वंश में किसी ने भी दिये हुए वचन वापस नहीं लिया। लेकिन पुत्र मोह में आकर दशरथ ने ऋषि से कहा - मैं राम को नहीं भेज सकता। ये शब्द सुनकर विश्वामित्र बहुत क्रुद्ध हुए। ऋषि ने वहाँ से निकल जाने का निर्णय लिया।

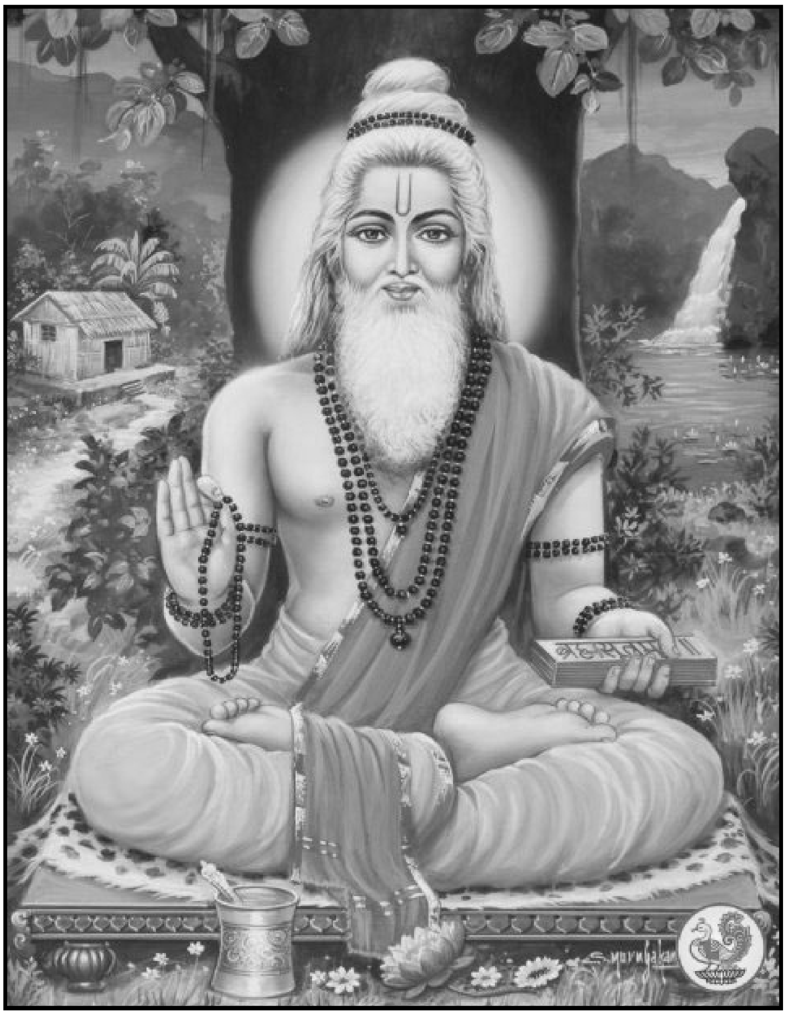
अच्छा उपदेश

वशिष्ठ ने तब दशरथ से कहा - ''यह धर्म के विरुद्ध है। दिये हुए वचन को वापस लेनेवाला पापलोक में पहुँचता है। विश्वामित्र, सच में, तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों को अनुग्रहीत करने के लिए ही आये हैं। राम को

भेजो। संकोच मत करो कि राम बालक है। विश्वामित्र उसे अन्यान्य अस्त्र और शस्त्र प्रदान करेंगे। वे शस्त्रास्त्र भविष्य में राम के लिए उपयोगी होंगे।'' दशरथ का हृद्भार हलका हुआ। राम और लक्ष्मण को दशरथ ने आनंदपूर्वक विश्वामित्र को सौंप दिया। दशरथ अपकीर्ति से मुक्त भी हुआ। राम के द्वारा राक्षस संहार के लिए यही शुभारंभ था। कुलगुरु के समयोचित उपदेश ने दशरथ को असत्यदोष से बचाया तथा राम को जगदेकवीर बना दिया।

योगवाशिष्टम्

युवावस्था में पहुँचते समय श्रीरामचंन्द्र के मन में एक बडा कोलाहल सवार हुआ। हर कोण से उसको पूरे ब्रह्मांड में निर्वेद ही दिखाई दे रहा था। संपदा, अधिकार, भोग - विलास, ये सभी परमसुख प्रदान करते हैं क्या? पल में नष्ट हो जानेवाले ये, शाश्वत सुख कैसे प्रदान करेंगे? इन प्रश्नों ने श्रीराम का नींद हराम किया, उसे अशांत बनाया। विलासपूर्व जीवन पर मोह रखने के समय, उससे विमुख होनेवाले अपने बेटे की दशा ने दशरथ को बहुत दुःखी बनाया। दशरथ कुछ नहीं कर पा रहे थे। एक दिन उनकी सभा में विश्वामित्र, नारद आदि ब्रह्मा पधारे। दशरथ ने उनके समक्ष, अपनी वेदना को प्रकट करने के लिए राम से कहा। राम ने अपने हृदय में उद्भूत वैराग्य का विवरण उनके सामने रखा। तब विश्वामित्र ने कहा - ''श्रीराम के मन को शांति चाहिए। उसे प्रदान करने के लिए वशिष्ठ भगवान ही समर्थ हैं। वशिष्ठ भगवान ज्ञानी हैं। समस्त लोकों की सृष्टि करनेवाले ब्रह्म ने इनको परिपूर्ण ज्ञान प्रदान किया। इससे बढकर, यह महात्मा रघुवंश के सभी राजाओं के कुलगुरु हैं। वे ही हर तरह से समर्थ व्यक्ति हैं।'' सभा में उपस्थित सभी ऋषि उनसे सहमत



हुए। तब वशिष्ठजी ने सभी के समक्ष श्रीराम को अपने पास बिठाया और अन्यान्य विषयों का बोध कराया। इन गुरु - शिष्य के संवाद ''योगवाशिष्ठम्'' नामक ग्रंथ के रूप में अब मिलता है। इसमें मानवजाति के लिए आवश्यक समस्त ज्ञान उपलब्ध है। आइये, इस ग्रंथ के कुछ सूक्तियों की जानकारी प्राप्त करके हर दिन उनका मनन करें -

1. बहुत सारे लोग भाग्य या भाग्यलिपि पर विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग कर्म विमुख रहते हैं। इनके जले चेहरों को ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी श्रीलक्ष्मी देखती तक नहीं है।

2. आलसीपन से अनेक अनर्थ होते रहते हैं। उसे छोडकर कार्यदीक्षा में रत रहने पर कौन ही संपन्न नहीं बन सकता? पंडित कैसे नहीं बनता?

3. आलोक, जिस भांति सूर्य का आश्रय लेता है, उसी भांति शास्त्रज्ञान, तपस्या, एवं वेद, विवेकवान के आश्रय में वास करते हैं।

4. शांति, सूझ, संतोष, भले व्यक्तियों से मैत्री - ये चारों, मोक्षसाम्राज्य के द्वारपालक के समान हैं।

5. विवेकवान किसी भी बात से दुःखी नहीं होता। वह किसी चीज पर मोह नहीं रखता। शुभ - अशुभ, किसी के लिए तरसता नहीं है। जो धर्मयुक्त होता है, उसी का आचरण करता है। जो अकरणीय होता है, उसे करता नहीं है।

6. मूर्खता, बहुत दुःख पहुँचाती है। मूर्खता के वशीभूत होने से कहीं अंधकूप में या वृक्ष की कोटरी में या अँधे कीडों की भांति जीना बहत्तर है।

7. भगवान विद्यमान है या नहीं, यह हमें निश्चित मालूम नहीं है। लेकिन उसके बारे में सोचना श्रेयस्कर है। क्योंकि उसकी अविद्यमानता को मानकर, उसके बारे में नहीं सोचने से कोई हानि नहीं होती। लेकिन अगर विद्यमान है, तो उसके बारे में सोचने पर इस भयंकर संसार रूपी सागर को हम आसानी से पार सकेंगे।

8. राज्य, संपदा, महाभोग, शाश्वत मोक्ष - ये सभी विचार अच्छी सूझ रूपी कल्पवृक्ष के फल हैं।

9. ज्ञानी, फल की अपेक्षा नहीं रखता। उपलब्ध अच्छे विचारों का उपभोक्ता होता है। सहृदयी एवं सदाचारी को 'तृप्तात्मा' कहते हैं।

10. कोई एक अच्छा गुण अपना लो। उसी के बल से अनेकानेक दोषों को नष्ट करनेवाले अच्छे गुण तुम तक आ पहुँचेंगें। ऐसा न होकर, एक दोष ही सही, अगर आपमें आकर बसता है तो सभी सद्गुणों को नष्ट करनेवाले समस्तदोष तुम में वास करने लगेंगे।

कुछ नहीं बचा है

इस प्रकार उस महात्मा ने श्रीरामचंद्र को अनेकानेक अच्छे उपदेश दिये। ये उपदेश अकेले राम को ही नहीं, बल्कि ब्रह्म नारद तथा विश्वामित्र को भी आनंद प्रदान किया। विश्वामित्र ने कहा - ''अनेक पुण्य कर्मों के फलस्वरूप हमने इनके वचन सुने। इसके कारण सहस्रों गंगा नदियों में स्नानाचरण करने पर जो पवित्रता मिलती है, वह मिली।'' श्रीराम के आनंद और शांति की कोई हद नहीं रही। राम ने कहा - ''हे गुरुदेव! संपदा, प्रवृत्ति, शास्त्र, विपदा के रूप, वाक्महिमायें आदि समस्त लोगों के लिये अवश्यंभावी होकर रहना, तथा उनकी निर्धारित पराकाष्ठा

का विवरण आपके शब्दों से हमें ज्ञात हुआ। अब जानने को कुछ भी नहीं बचा है।'' इन विचारों के माध्यम से राम ने अपने हृदय में उद्भूत आनंदानुभूति को मुखरित किया। नारदादि महामुनियों ने भी बडी तृप्ति पायी। वशिष्ठ महर्षि के वचनों की ज्ञान गंगा, सर्वकाल, सर्वावस्थाओं में जातिभेद रहित, स्त्री - पुरुष भेद रहित, बाल - वृद्ध भेद रहित, आनंद प्रदान करती रहेगी। वशिष्ठि का अर्थ है - रुप धारण करनेवाली तपस्या साकार सरस्वती है, मानुष वेषधारी ज्ञान है, नित्यसत्य प्रकाश है। इसीलिए उनको ''श्री वशिष्ठ भगवान'' कहते हैं।

* * *